



BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

जागरूकता से स्वामित्व तक नदी संरक्षण के लिए जन-आंदोलन खड़ा करना

02 सितम्बर, 2026

सदियों से गंगा भारत की सभ्यता, संस्कृति और दैनिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसने पीढ़ियों से समुदायों का पोषण किया है, आजीविकाओं को सहारा दिया है और परंपराओं को प्रेरणा दी है। हालांकि, समय के साथ बढ़ते शहरों, प्रदूषण और अनियोजित शहरीकरण ने नदी पर दबाव बढ़ा डाला। इसके कारण नदी के पारिस्थितिक स्वास्थ्य को मजबूत करने और लोगों के साथ उसके संबंधों को मजबूत बनाने की आवश्यकता स्पष्ट हुई। इसलिए, गंगा का पुनरुद्धार केवल उसके जल की सफाई तक सीमित नहीं हो सकता। इसी व्यापक समझ ने 2014 में शुरू किए गए नमामि गंगे कार्यक्रम (एनजीपी) को आकार दिया।

यह कार्यक्रम गंगा और उसकी सहायक नदियों के लिए एक एकीकृत संरक्षण मिशन है। इसमें प्रदूषण नियंत्रण, संरक्षण और नदी के पुनर्जीवन को एक साथ जोड़ा गया है। नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत सीवेज शोधन, नदी तटों का विकास, वनीकरण आदि क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। वैज्ञानिक निगरानी और जन-जागरूकता इस एकीकृत प्रयास को और मजबूत करती हैं। फिर भी, स्थायी बदलाव के लिए उस साझेदार की आवश्यकता है, जिसके बिना कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता। वह साझेदार स्वयं समुदाय है। इसी विश्वास से जन गंगा का उदय हुआ, जो नमामि गंगे का जनभागीदारी स्तंभ है। जन भागीदारी की परिकल्पना से प्रेरित होकर यह पहल लोगों को संरक्षण के केन्द्र में रखती है। यहीं से नमामि गंगे लोगों की कहानी बनती है—एक ऐसी कहानी, जो जागरूकता से भागीदारी और अंततः स्वामित्व की ओर बढ़ती है।

नदी के साथ एकजुटता: जनभागीदारी के कथानक का उत्सव

एक नदी पर्यावरण संरक्षण से आगे बढ़कर भी लोगों को ऐसे तरीकों से जोड़ सकती है, जो उनके बीच एकता की भावना को मजबूत करते हैं। इसके तट ऐसे स्थल बन जाते हैं, जहां समुदाय एकत्रित होते हैं, भाग लेते हैं और अपने साझा जुड़ाव का उत्सव मनाते हैं। जन गंगा स्वच्छता अभियानों, वृक्षारोपण

अभियानों और शैक्षिक पहलों के माध्यम से ऐसे अवसर सृजित करती है। ये गतिविधियां संरक्षण को किसी एक व्यक्ति की जिम्मेदारी के बजाय एक सामूहिक अनुभव में बदल देती हैं।

नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत जनभागीदारी की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्तियों में से एक नदी की स्वच्छता है। **गंगा स्वच्छता पखवाड़ा** इस संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण मंच बन चुका है। प्रतिवर्ष **16 से 31 मार्च** तक आयोजित पखवाड़े भर के कार्यक्रम गंगा की मुख्य धारा वाले पांच प्रमुख बेसिन राज्यों में हजारों लोगों तक पहुंचते हैं। इनमें **उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल** शामिल हैं। इसके साथ ही इसमें **राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली** तथा गंगा की सहायक नदियों के किनारे स्थित नगर भी शामिल हैं। विद्यार्थी, स्वयंसेवक, सामुदायिक समूह और अन्य हितधारक नदी संरक्षण के प्रति जनभागीदारी को मजबूत करने के लिए समन्वित प्रयासों में भाग लेते हैं।

इस गतिशीलता को दिल्ली में **यमुना** के किनारे नियमित रूप से आयोजित होने वाले साप्ताहिक स्वच्छता अभियानों के माध्यम से भी निरंतर बनाए रखा जा रहा है। ये अभियान नदी के विभिन्न हिस्सों और आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने में प्रत्यक्ष योगदान देते हैं। सामूहिक रूप से, ऐसे प्रयास नदी संरक्षण को केवल निर्धारित अवसरों तक सीमित गतिविधि के बजाय एक नियमित नागरिक दायित्व बनाने में मदद कर रहे हैं।



जैसे-जैसे समुदाय नदी के विभिन्न हिस्सों को स्वच्छ रखने के लिए देखरेख कर रहे हैं, उनका ध्यान नदी के तटों की ओर भी बढ़ रहा है। इसी कारण नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत जनभागीदारी का एक अभिन्न हिस्सा वृक्षारोपण भी बन गया है। स्वस्थ वनस्पति नदी के तटों को स्थिर बनाए रखने और मृदा अपरदन को कम करने में मदद करती है। ये पारिस्थितिक लाभ नदियों और उनके आसपास के आवासों की लचीलेपन की क्षमता को मजबूत करते हैं।

इसके साथ ही, 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान ने वृक्षारोपण गतिविधियों में जनभागीदारी को और गहरा किया है। यह अभियान लोगों को अपनी माताओं के प्रति स्नेहपूर्ण श्रद्धांजलि के रूप में पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। साथ ही, यह व्यक्तिगत भावनाओं को पर्यावरण संरक्षण के प्रति साझा जिम्मेदारी से जोड़ता है। इस भावनात्मक जुड़ाव ने व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को नए उत्साह और उद्देश्य के साथ भाग लेने के लिए प्रेरित किया है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भी यही भावना देखने को मिलती है, जब नागरिक एकजुट होकर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भाग लेते हैं। वृक्षारोपण अभियानों, जन-जागरूकता गतिविधियों और सामुदायिक पहलों के माध्यम से यह अवसर पर्यावरण संरक्षण में जनभागीदारी को और मजबूत करता है।



किसी जन-आंदोलन की मजबूती तब और बढ़ जाती है, जब उसके मूल्यों की पहुंच अगली पीढ़ी तक होती है। इसी कारण जन गंगा में युवाओं की भागीदारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय अब पर्यावरण संबंधी सीख और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न अवसर प्रदान कर रहे हैं। विद्यार्थी निबंध, चित्रकला, पोस्टर, वाद-विवाद और संवादात्मक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से नदी से जुड़े विषयों को समझकर और अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।

अनुभवात्मक गतिविधियां कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक दुनिया की पारिस्थितिक चुनौतियों से जोड़ने के अवसर प्रदान करती हैं। विश्वविद्यालय गंगा क्लब व्याख्यानों, क्षेत्रीय भ्रमण, स्वयंसेवी गतिविधियों और जनसंपर्क पहलों के माध्यम से इस भागीदारी का विस्तार करते हैं। इको-क्लब, एनसीसी इकाइयां और शैक्षणिक संस्थान निरंतर भागीदारी के लिए अतिरिक्त मंच उपलब्ध



कराते हैं। सामूहिक रूप से, ये प्रयास ऐसे जागरूक युवा नागरिकों के निर्माण में सहायक हैं, जो पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से आगे बढ़कर नदियों के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

नमामि गंगे कार्यक्रम ने नदी संरक्षण को कई वार्षिक आयोजनों के साथ जोड़ा है। ये अवसर पूरे वर्ष लोगों को नदियों से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इनमें **गंगा उत्सव** जनभागीदारी के एक प्रमुख मंच के रूप में विशेष महत्व रखता है। यह गंगा को **भारत की राष्ट्रीय नदी** के रूप में मान्यता दिए जाने की स्मृति में आयोजित किया जाता है। इसके अंतर्गत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, प्रदर्शनियां, कला प्रतियोगिताएं और जन-संवाद आयोजित किए जाते हैं, जो लोगों की भागीदारी और सामूहिक अभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करते हैं। **स्वच्छता ही सेवा** और **अंतरराष्ट्रीय योग दिवस** सहित अन्य अवसर भी जनभागीदारी के अवसरों का विस्तार करते हैं। ये आयोजन लोगों और नदियों के बीच स्थायी सांस्कृतिक संबंध को और मजबूत करते हैं।



नदियों के साथ गहरा जुड़ाव अक्सर केवल जागरूकता के बजाय प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से विकसित होता है। **नमामि गंगे कार्यक्रम** ने नदी संरक्षण की भावना को जनजीवन का हिस्सा बनाने के लिए अनेक अभिनव पहल की हैं। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण **सीमा सुरक्षा बल की सभी महिला सदस्यों का गंगा नदी में राफ्टिंग अभियान** था। इस अभियान के तहत गंगा के ऊपरी क्षेत्रों से लेकर



समुद्र तक यात्रा की गई, जिसमें साहस, सहयोग और पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन हुआ। इस अभियान ने गंगा को केवल एक प्राकृतिक संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि लोगों के जीवन और भावनाओं से जुड़ी एक जीवंत धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों, स्थानीय निवासियों और युवा स्वयंसेवकों के साथ संवाद ने विचार-विमर्श और अनुभव साझा करने के लिए नए अवसर प्रदान किए।

पूरे गंगा बेसिन में गंगा प्रहरी जमीनी स्तर पर संरक्षण प्रयासों में सहयोग करने वाले समर्पित सामुदायिक स्वयंसेवकों के रूप में उभरे हैं। वे स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने, जिम्मेदार कार्य प्रणालियों को प्रोत्साहित करने और स्थानीय जैव विविधता के संरक्षण के लिए कार्य करते हैं। गंगा सेवा दूत स्कूलों, संस्थानों और आस-पड़ोस के क्षेत्रों में जनसंपर्क गतिविधियों का विस्तार कर इन प्रयासों को और मजबूत करते हैं। जागरूकता अभियानों और स्थानीय पहलों के माध्यम से वे नदी संरक्षण को समुदाय के दैनिक जीवन के और करीब लाने में मदद करते हैं। जलीय जीवन का संरक्षण, आवासों का पुनरुद्धार और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना लोगों के नदी के साथ जुड़ाव को और मजबूत करता है। सामूहिक रूप से, ये स्वयंसेवी नेटवर्क जन भागीदारी की भावना को नागरिक-नेतृत्व वाले कार्यों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। उनके प्रयास दर्शाते हैं कि जागरूक और सशक्त समुदाय किस प्रकार नदियों तथा उनके आसपास के पारिस्थितिक तंत्र के दीर्घकालिक संरक्षक बन सकते हैं।



नदी प्रबंधन की संस्कृति तैयार करना

नदी के पुनरुद्धार का स्थायी सकारात्मक प्रभाव केवल एक स्वस्थ नदी नहीं, बल्कि उसके साथ मजबूत संबंध भी है। बुनियादी ढांचा नदी के स्वास्थ्य को बहाल कर सकता है, वैज्ञानिक हस्तक्षेप इकोसिस्टम को मजबूत कर सकते हैं और प्रौद्योगिकी निगरानी एवं प्रबंधन को बेहतर बना सकती है। फिर भी, नदियों का दीर्घकालिक भविष्य ऐसी किसी चीज पर निर्भर करता है, जिसे केवल इंजीनियरिंग के माध्यम से तैयार नहीं किया जा सकता। जन गंगा के माध्यम से नमामि गंगे कार्यक्रम ने यह दिखा दिया है कि प्रत्येक प्रयास किस प्रकार एक व्यापक परिवर्तन में योगदान देते हैं। यह पहल केवल एक पर्यावरणीय मिशन तक सीमित नहीं है। जन भागीदारी की परिकल्पना से प्रेरित होकर यह दर्शाती है कि सामूहिक प्रयास किस प्रकार दीर्घकालिक विकास की आधारशिला बन सकते हैं।

संदर्भ

जल शक्ति मंत्रालय

<https://www.jalshakti-dowr.gov.in/offerings/schemes-and-services/details/namami-gange-AO5ATNtQWa>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2109118®=48&lang=2>

संस्कृति मंत्रालय

<https://amritkaal.nic.in/event-campaign-detail?98>

पीआईबी रिसर्च

पीके/केसी/केपी